आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 343 ARYA SABHA MAURITIUS *25th Sept. to 1st Oct. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

दीर्घायु और सफल जीवन की कामना

AYONS UNE LONGUE VIE BIEN RÉUSSIE

Om ! Trayambakam yajāmahe sugandhim pushtivardhanam.
Urvārukamiva bandhanān-mrityor mukshiya māmritāt.
Trayambakam yajāmahe sugandhim pativedanam.
Urvārukamiva bandhanādito mukshiya māmutah.

Yajur Veda 3/60

Glossaire / Shabdartha

Sugandhim : (i) Quand il s'agit de l'air de la nature, des fleurs, des fruits, entre autres, cela signifie parfum, odeur agréable, senteur, arome. (ii) Quand il s'agit de l'homme cela veut dire – des caractères, oeuvres et dispositions exemplaires, la gloire, l'honneur, le renom, le charisme, la célébrité, la bonne réputation.

Pushtivardhanam : qui consolide ou aide à développer et à faire épanouir tout le potentiel de notre corps, de notre âme et de la société.

Trayambakam : Dieu, le Seigneur tout-puissant qui est (*Rudra*) notre protecteur qui punit ou fait pleurer nos ennemis, les méchants et les malfaiteurs et Il est le Juge Suprême qui nous accorde les fruits de toutes nos actions (*karmas*) car il connait toutes nos vies antérieures.

Yajāmahé – Prions Dieu avec grande ferveur quotidiennement, pratiquons le méditation et sollicitons sa bénédiction.

Urvārukamiva : Tout comme le melon ayant atteint sa pleine maturité

Bandhanāh : se sépare ou se détache de sa corde (liane) en douceur et devient très savoureux ou succulent de la même façon nous aussi les âmes (ātmas)

Mrityoha : lorsque nous quitterons ou nous délaisserons ce corps physique (au moment de la mort)

Mukshiya : nous nous libérerons de toute attachement sans aucun problème.

Amritat : nous atteindrons selon les mérites de nos Karmas, notre prochaine naissance ou le bonheur, suprême, voire la félicité éternelle, (*Moksha*), c'est-à-dire, la libération de notre âme du cycle éternel de la vie et de la mort.

Mā - durant toute notre vie il nous faut à tout prix suivre et préserver la vie spirituelle énoncée dans les Védas à travers notre foi et notre dévotion envers Dieu qui est unique dans son genre et c'est lui, seul qui est digne d'adoration et pas d'autres.

Pativedanam : Notre dévotion ou prière à Dieu qui est le Seigneur et le Protecteur de tous.

Amutaha : La félicité Eternelle ou le Bonheur Suprême (*Moksha*) – c'est le fruit ou la plus haute récompense que le Seigneur nous accorde pour toutes nos bonnes actions (*karma*) notre dévotions, notre sincérité, notre honnêteté, nos sacrifices, notre intégrité et toutes nos bonnes pensées et aide envers nos prochain durant toutes nos vies précédantes.

Interprétation / Anushilan

C'est un verset très important du Yajur Veda quit est souvent récité par le *purohit* (le prêtre officiant) au cours des rites (Yajnas) pour solliciter la bénédiction du Seigneur pour le bien-être des fidèles (Yajmāns).

Ce verset nous transmet, un message fort pour le salut de toute l'humanité et nous conseille fortement d'adorer ou d'offrir nos prières qu'à Dieu seulement (car Il est unique au monde) et pas à d'autres. En agissant autrement ou va à l'encontre des enseignements des Védas et en conséquence, cela ne nous apportera que la peine, la souffrance, la maladie, le malheur, la désolation ou la ruine.

Tout en accomplissant le travail quotidien pour notre gagne-pain et nos obligations familiales et sociales, nous devons à tout prix suivre et préserver pendant toute notre vie la voie spirituelle énoncée dans les Védas à travers notre foi et notre dévotion envers le Seigneur qui est notre protecteur. C'est lui qui est le Juge Suprême qui nous accorde, selon les mérites de nos actions (de notre vie actuelle et de nos vies antérieures) la prochaine naissance ou la félicité éternelle / Le Bonheur Suprême (*Moksha*) voire la libération de notre âme du cycle de la vie et de la mort.

Cependant il y a une analogie ou une grande similitude entre le cheminement de la vie de l'homme qui suit la voie énoncée dans les Védas, et celui du melon – un fruit dont tout le monde est familier.

Ce fruit est dès sa naissance, lié à sa corde (liane) et reste ainsi jusqu'à ce qu'il atteigne la maturité, et devienne très succulent et savoureux. A ce moment il se détache ou se sépare de sa corde en douceur (sans aucun effort).

De la même façon l'âme (*ātmā*), pour accomplir ses karmās, doit venir ou monde (naitre) en assumant un corps humain et en y séjournant durant toute la vie de ce corps en jouissant d'une longue vie réussie, et glorieuse, d'une bonne santé, de beaucoup de vigueur et de bonheur.

Ainsi au moment de la mort d'un tel homme, son âme se défait de tout attachement familial et matériel, n'a aucune peine ou souffrance qui l'accable et elle délaisse ou se sépare de l'enveloppe mortelle avec satisfaction et en toute quiétude, en d'autres mots en douceur, pour atteindre le bonheur suprême (*Moksha*).

N. Ghoorah

सम्पादकीय

आत्महत्या की रोक-थाम

जीवन पर्यन्त अपने प्राणों की रक्षा करते रहना और दूसरों की जान बचाना मानव-धर्म है। विश्व में हम सर्वोत्तम प्राणी माने जाते हैं, क्योंकि परमात्मा ने हमें सोचने, समझने और विचार विमर्श करने की शक्ति दी है। आत्म-रक्षा करने की बौद्धिक-शक्ति प्रदान की है। हमें बुद्धिहीन बनकर कभी भी आत्महत्या करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

आज यह देखा जा रहा है कि कई भोले-भाले इन्सान किसी समस्या के कारण खुदखुशी कर बैठते हैं। क्रोधवश जल्द ही बिना सोचे-समझे अपनी जान गवाँ देते हैं। किसी मुसीबतों का सामना न करने पर दुनिया से बिदा हो जाते हैं और उनके परिवार, रिश्ते-नाते शोकातुर हो उठते हैं। आत्महत्या से बचने के लिए आज अपने परिवारों, सगे-सम्बन्धियों और पड़ोसियों में एक अभियान चलाने की ज़रूरत है।

हमारा देश साढ़े बारह लाख की आबादी वाला एक सुन्दर टापू है, फिर भी इस स्वर्ग-सदृश देश में हत्या और आत्महत्या की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही है । कितने लापता जनों का कोई निशान नहीं दिखता। हर दो दिनों के बाद सुनसान जगहों में मृतकों के अवशेष प्राप्त हो रहे हैं; जो हमारे लिए एक चिन्ता का विषय है । इन दर्दनाक घटनाओं के कारण हम सभी लोग चिन्तित हैं, पुलिस विभाग बेचैन है, परन्तु हत्या और आत्महत्याओं की संख्या घटती नहीं ।

सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय में 'Life Plus Unit' की स्थापना की गई है, जो हत्याओं एवं आत्महत्याओं की रोकथाम में एक भारी अभियान चला रही है। उस छदत्द्य के अनुसार हर साल संसार में दस लाख १०००,००० व्यक्ति आत्महत्या कर बैठते हैं और हमारे इस छोटे देश में लगभग एक सौ आदमी खुदखुशी करते हैं। खोजों के अनुसार यह पता लगाया गया है कि आत्मा-हत्या करने के अनेक कारण होते हैं जैसे कि तनाव, चिन्ता, क्रोध, दिमाग़ी-थकावट, कर्ज़, प्रेम-वियोग, भयानक रोग से ग्रसित, आत्म-हीनता, विवाह-विच्छेद, वृद्धावस्था, असफलता, असहारा आदि।

बच्चे, जवान और वृद्ध सभी लोग किसी कारण वश आत्म-हत्या करने पर उतर आते हैं। अनपढ़, विद्वान्, ग़रीब, धनी सभी वर्ग के लोग आत्म हत्यारे होते हैं। कई बच्चे अधिक लाड़-प्यार के कारण बिगड़ कर क्रोधवश अपनी जान गवाँ देते हैं। छात्रगण परीक्षा में असफल होने पर तनाव में आकर खुदखुशी कर लेते हैं। कई जवान प्रेम वियोग में ज़हर पी लेते हैं। कितने गृहस्थी पारिवारिक समस्या हेतु अपने जीवन का अन्त कर बैठते हैं। पति-पत्नी विवाह-विच्छेद की चिन्ता में अलग होकर प्राण त्याग देते हैं और कितने असहाय वृद्ध लाचार होकर स्वयं अपनी जान ले लेते हैं।

संसार में मनुष्य को छोड़ कर अन्य जीव कभी भी आत्म-हत्या नहीं करते हैं, वे बुद्धिहीन होकर भी ऐसी भूल नहीं करते हैं, हम मनुष्य बुद्धिजीवी होकर आत्म-हत्या कर बैठते है; क्या यह हमारी नादानी नहीं? जीवन में अगर कोई ऐसी गम्भीर समस्या आ जाय जिसका निवारण करना मुश्किल हो तो ऐसी स्थिति में अपने हितैषी-मित्रों, परिवार के सदस्यों, गुरु जनों, सलाहकारों से सलाह लेना परम आवश्यक है। वे अवश्य ही कोई न कोई राह दिखा देंगे, जिससे आप की जान बच सके।

गत शनिवार दिनांक १० सितम्बर को सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय की 'Life Plus Unit' द्वारा पोर्ट लुई के नगर पालिका भवन में विश्व आत्म हत्या-रोकथाम दिवस (World Suicide Prevention Day) आयोजित किया गया था, जिस अवसर पर, हमारे देश में आत्महत्या पर रोकथाम करने की चर्चा की गई और सभी परिवारों और सामाजिक संस्थाओं से इस अभियान में पूरा सहयोग देने की माँग की गई ।

आर्यसमाज तो वेद-विद्या द्वारा मानव का उद्धार करने वाला एक प्रबल संगठन है। हम समस्त आर्य सेवक-सेविकाएँ अपना पूरा सहयोग देंगे तो अवश्य ही सत्य विद्याओं के प्रचार-प्रसार से यहाँ के नागरिकों के ज्ञानचक्षु खुलेंगे और यहाँ आत्महत्या जैसे पाप का सिलसिला कम हो जाएगा ।

बालचन्द तानाकूर

साधु रामनारायण

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - मंत्री आर्य सभा

अति गरीब माता-पिता के घर पर साधु रामनारायण का जन्म १५.०६.१९०९ में फ़्लाक ज़िले के बोनाकेई गाँव में हुआ था। उसी बोनाकेई गाँव ने रामकृत जगेसर का भी जन्म हुआ था। अभी रामनारायण बाल्यावस्था में ही थे कि माता-पिता का देहावसान हो गया और रामनारायण का बुरा दिन आ गया। उस वक्त मोरिशस टापू दयनीय आर्थिक स्थिति से गुज़र रहा था। यद्यपि-गुलामी से बरी हो गया था वर्षों पहले तथापि कामगरों के साथ ग़ुलाम की तरह सलूक किया जाता था। सूर्योदय से पहले मज़दूर खेतों में पहुँच जाते और दिनभर कड़ी मेहनत करके सूर्यास्त के बाद घर वापस आते फिर भी थोड़ा पारीश्रमिक प्राप्त करते थे। पेट भरने के लिए पर्याप्त धन नहीं मिलता कम और असंतुलित भोजन खाने से शरीर रोगी हो जाता था। चीनी कोठी की ओर से बीमार लोगों को समय पर उचित दवा नहीं मिलती। लोग बहुत जल्दी बूढ़े हो जाते और देखते-देखते मृत्यु के ग्रास हो जाते।

भारतीय मूल के बच्चों की पढ़ाई का कोई उचित प्रावधान नहीं था। बहुत कम बच्चे स्कूल जाते। जो जाते भी थे दो-तीन साल की पढ़ाई के बाद प्राथमिक पढ़ाई छूट जाती थी। अनाथ रामनारायण को स्कूल की पढ़ाई से वंचित रहना पड़ा। जो पढ़ लिख लेते उन्हें नौकरी नहीं मिलती भी थी मामूली नौकरी के लिए तो क्रिस्चन धर्म में दीक्षित होना पड़ता। इसलिए नौकरी प्राप्त करने के लालच में आकर बहुत से हिन्दू ग़रीब बच्चे कृस्चन बन जाते। निजी सेक्टर में नौकरी प्राप्त करने के लिए तो धर्म-परिवर्तन होता ही था। शक्कर कोठी या चीनी के कारखाने में भी नौकरी मिलती थी। पादरीजन घर घर जा कर लालच दिखाते। एक तरफ़ प्रोटेस्टेंट पादरी और दूसरी तरफ़ कातोलीक पादरी अपने चंगुल में फँसाते। आलबर्ट नाम के बहकावे में आकर नवयुवक रामनारायण प्रोटेस्टेंट क्रिस्चन बन गया। फिर भी कोई अच्छा धन प्राप्त नहीं हुआ। उस सूरत में फिर से अपने धर्म में आने का निश्चय किया। सनातन धर्मानुसार कृस्चन बनें लोगों को वापस लाने का कोई प्रावधान नहीं था क्योंकि अपने धर्म से च्युत होने वालों को अछूत समझा जाता था। समाज से वहीशकार कर दिया जाता था। शुद्धि प्रथा आर्यसमाज में अभी फैला नहीं थी। पाखंड जड़ जमा चुकी थी। रामनारायण साधु ने वैसी स्थिति में अपने बचपन के परम मित्र युवक रामकृत के पूज्य चाचा जी मोतीलाल जो तत्कालीन स्थानीय समाज के प्रधान थे, उनसे सलाह ली कि वह क्या करे। उस समय स्वामी विज्ञानानन्द मोरिशस में वेद प्रचारार्थ आये हुए थे। बोनाकई समाज में रामनारायण की शुद्धि करके फिर से उसके धर्म में लाने का आयोजन किया गया। स्वामी जी आये हवन-यज्ञ के बाद शुद्धि के विशेष मंत्र पढ़े गए और नवजवान का पुराना नाम पुनः दिया गया। अपना पुराना नाम पाकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

आर्यसमाज के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए साधु जी समाज में आने लगे पर समाज के अन्य सदस्य रामनारायण के प्रति उदासीन थे। दिल खोलकर उन्हें स्वीकार नहीं करते लेकिन समाज के उस वक्त के प्रधान श्री मोतीलाल जगेसर की ओर से उन्हें हमेशा सहयोग व सहायता प्राप्त होती रही और विषम परिस्थिति का सामना करते हुए भी टिके रहे ।

बेहद गरीबी समाज में छायी हुई थी। परिवार के लिए आर्थिक आय की अत्यन्त आवश्यकता थी। एक मामूली सरकारी कर्मचारी बनें। राजमार्ग सभी कच्चे थे। उनकी मरम्मत के लिए अभी आज जैसे पत्थर नहीं मिलते मज़दूर लोग हथौड़े से रास्ते किनारे पत्थर तोड़ते थे। धूप में दिन भर काम करना पड़ता और ऊपर से सरकार की झिड़कियाँ सुननी पड़तीं ।

सभा प्रधान श्री मोतीलाल का स्नेह भाजन तो वे थे ही। उनके प्रति उनका अटल विश्वास था। एक बार उन्होंने धरोहर के रूप में कुछ रुपये भी दिये थे। और बाद में अपने पैसे वापस ले भी गये थे।

इस प्रकार जीवन चलता रहा। एक दिन दुर्भाग्यवश वे बीमार पड़ गये। उन्हें फ्लाक के अस्पताल में दाखिल करवाया गया। बीमारी इतनी बढ़ गई कि उन्हें जीने की आशा नज़र न आ रही थी। अपने विश्वस्त मित्र मोतीलाल से बोलते कि जीवन का अन्त हो जाएगा। अस्पताल में ही था कि समाचार मिला कि उनकी पत्नी मोटड़ी-गठरी बाँधकर उन्हें छोड़कर चली गयी।

आरोग्य हो जाने के बाद उनको वैराग्य सताने लगा समाज सेवा का व्रत ले लिया और रामकृत जगेसर के सामने अपने जीवन का उद्देश्य प्रकट किया। चूँकि रामकृत जी पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के भक्त थे। उन्होंने पंडित जी से उपनयन संस्कार करवाने की सलाह दी पर पंडित जी संस्कार नहीं करते। उन्होंने कहला भेजा कि संस्कार रामकृत ही को करना होगा। अतः रामकृत ने आचार्य बनकर १९४० के मई महीने में बोनाकेई समाज में ही संस्कार किया। तभी से साधु रामनारायण नाम से जाने लगे। सामाजिक प्रचार कार्य करने के लिए उनको एक पत्र प्राप्त करना था। पर उनकी माँग को परोपकारिणी सभा ने अस्वीकार कर दिया। तब साधु जी ने बोनाकेई समाज से अर्ज़ किया और बोनाकेई समाज के मंत्री जो रामरत्न शहज़ादा थे अपने हस्ताक्षर देकर मानपत्र दिया और भीषण प्रतिज्ञा करवायी कि आजीवन समाज सेवा करेंगे। वे निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए निकल पड़े । वे पैदल चलते और जहाँ रात्रि आ जाती वहीं एक जगह ढूँढ़ कर सो जाते। और रात्रि में भी सेवाकार्य जारी रखते। वे पूरे अतिथि होते थे। बिना बुलाये एक गाँव में पहुँचकर आतिथ्य प्राप्त करना सहज नहीं था। किसी किसी गाँव में आर्य समाजी बहुत कम होते। कहीं कहीं उन्हें अपमानित किया जाता। कहीं भोजन नहीं मिलता और कहीं तो कठिनाई होती सोने के लिए एक ठौर प्राप्त करना। पर वे निराश होने का नाम नहीं लेते। कहीं-कहीं उन्हें पेट पालने वाले साधु बोलकर अपमान करते थे।

क्रमशः

पितृपक्ष

पं० रामसुन्दर शोभन, शास्त्री

'पितृपक्ष' के अवसर पर पौराणिक जगत् अपने दिवंगत पितरों को श्राद्ध-तर्पण आदि कर्म करते हैं। वैदिक धर्मी जीवित माता-पिता और बड़े जनों को श्रद्धापूर्वक सेवा-शुश्रूषा करके उन्हें तृप्त करते हैं। **'शन्नो भवन्तु पितरः'**, हे पितर लोगो ! आप हमारी सेवाओं से सुख का अनुभव करें।

'पितर' शब्द कान में पड़ते ही बहुत से हिन्दुओं के मन में मरे व्यक्ति का चेहरा आ जाता है। 'पितृ' शब्द का अर्थ है माता, पिता और जो उम्र में बड़े हों। संस्कृत व्याकरण के आधार से 'पितृ' (पिता) शब्द ऋकारान्त पुल्लिंग शब्द है। 'पितृ' बहुवचन में पितरः बनता है। शब्द रूप में इस शब्द का इस प्रकार प्रयोग होता है – एकवचन में 'पिता', द्विवचन में 'पितरौ' और बहुवचन में 'पितरः'। 'पितरः' शब्द में सब जीवित बड़े जन आ जाते हैं। जीवित माता-पिता, बूढ़े-वृद्धों की सेवा-शुश्रूषा करना ही 'पितृयज्ञ' है।

पितृपक्ष में मरे पितरों का तर्पण और श्राद्ध करना बहुत गलत धारणा है। मरकर तो लोग दूसरा जन्म ले लेते हैं। जिस प्रकार तृणायुयिका एक पत्ते को त्यागकर दूसरे पत्ते पर चली जाती है। उसी प्रकार आत्मा मृतक शरीर को छोड़कर कर्मानुसार दूसरे शरीर को धारण कर लेती है। क्या पता वह आत्मा किस शरीर में गयी है।

गृहस्थ के लिए तो साल भर का हर एक दिन पितृपक्ष है। उनको अपने जीवित माता-पिता की सेवा करनी चाहिए । जब पुत्र-पौत्र अपने पिता, बाबा, माँ, दादी आदि को श्रद्धापूर्वक अन्न खिलाते हैं तब 'श्राद्ध' कहाता है। उससे उन लोगों को तृप्ति होती है। उनको जो सेवा मिली, उसे 'तर्पण' कहा जाता है।

'शन्नो भवन्तु पितरो' (ऋग्वेद ७/३५/१२) मन्त्र के अनुसार सत्य के रक्षक, उत्तम घोड़े, गौएँ, विद्वान्, निपुण कारीगर, प्रत्येक कार्य में रक्षक माता-पिता हमारे लिए सुखकारी हों। ये सब जीवित हैं। ये सब अच्छे करने वाले हैं और मधुर बोलने वाले हैं।

सेवा करने वाले और सेवा कराने वाले दोनों जीवित होने चाहिए। यही नहीं, निकट भी होने चाहिए। तभी हम श्राद्ध और तर्पण दोनों एक साथ कर सकेंगे ।

वेद में पुनर्जन्म

पंडिता अनीता छोटी, शास्त्री

संसार में जो भी आता है वह एक न एक दिन जाता है। वैदिक सिद्धान्त में पुनर्जन्म की मान्यता है। वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों ने इस बात को सिद्ध किया है। जीव अजर, अमर और अविनाशी है। आत्मा का नाश नहीं होता है। आत्मा इस संसार में शरीर के माध्यम से कार्य करती है। जब शरीर थक जाता है, पुराना हो जाता है,बीमारी आदि के कारण दुखदायक और कर्महीन हो जाता है, तब दयालु परमेश्वर की कृपा से आत्मा उस शरीर को त्याग दूसरे शरीर में कर्मानुसार प्रवेश करती है।

मृत्यु और जन्म कर्मानुसार ही प्राप्त होता है। शरीर की अनेक अवस्थाएँ होती है। यथा जन्म, शिशु अवस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था और जरावस्था। मृत्यु निश्चित है।

ऋग्वेद के दसवें मंडल का यह मन्त्र कहता है :–

ओ३म् । सं गच्छस्व पितृभिः सं यमे
नेष्टापूर्तेन परमे व्योमन् ।
हित्वा यावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व
तन्वा सुवर्चाः ।। *ऋ १०/१४/२*

इस मन्त्र का अन्त्येष्टि संस्कार के समय श्मशान में उच्चारण किया जाता है।

जीव शरीर से निकलकर किरणों के द्वारा महान् आकाश में जाता है, वायु के साथ रहता है,अपने अच्छे कर्मों के अनुसार अनुत्तम शरीर को छोड़कर नये घर में जाता है और नये तेजस्वी शरीर के साथ संसार में पुनः आता है।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है।

सहैव मृत्युर्व्रजति सह मृत्युर्निषीदति ।
गत्वा सुदीर्घमध्वानं सह मृत्युर्निवर्तते ।।

वाल्मीकि रामायण के इस श्लोक में कहा गया है कि मृत्यु मनुष्य के साथ ही चलती है, साथ ही बैठती है, बहुत दूर जाकर फिर साथ ही लौट आती है ।

मृत्यु एक ऐसा सत्य है जिससे कोई नहीं बच सकता है। बड़ा-छोटा, अमीर-गरीब, सुखी-दुखी, जो भी इस संसार में जन्म लेता है, उसे मरना पड़ता है, कभी बच्चा जन्म लेते ही मर जाता है, कभी मरा हुआ जन्मता है, तो कभी चार-छः महीने जीकर मर जाता है। कोई विवाह कर पचास-साठ वर्षों तक सुखी-दाम्पत्य जीवन जीकर मरता तो कोई विवाह के एक सप्ताह बाद ही मर जाता है।

भगवद् गीता में श्री कृष्ण महाराज अर्जुन से कहते हैं –

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।
तथा
शरीराणि विहाय जीर्णान्
यन्यानि संयाति नवानि देही

जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ों को उतार कर नये वस्त्र पहन लेता है। वैसे ही जीवात्मा पुरानी देह को त्यागकर नया शरीर धारण करता है।

कठोपनिषद् में आचार्य यम, अपने शिष्य नचिकेता के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं –

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः ।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम् ।।
बल्लि ५/७

मृत्यु को प्राप्त हुए 'देहिन' अर्थात् जीव, अपने-अपने कर्म और ज्ञान के अनुसार शरीर धारण करता है। कोई 'जंगम' अर्थात् चलने-फिरने वाली योनियों को प्राप्त होता है और अन्य स्थावर यानी जो चलता नहीं, ऐसी योनियों को जाते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र में परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि यह आत्मा जो इस शरीर में वास करती थी, उसको हे प्रभु! आप उसके कर्मानुसार गति दें। प्रार्थना है कि हे प्रभु! यह आत्मा **'पितृभि गच्छस्व'** माता-पिता गुरु के संग में जाये ।

शरीर को भस्म करते हुए, सगे-सम्बन्धी और गुरुजन मन्त्र द्वारा स्वाहा करते हुए, परमात्मा से विनती करते हैं कि यह जो आत्मा इस शरीर से निकली है, उसे पुनः माता-पिता और गुरुजनों का संग प्राप्त

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

देवकी-पुत्र श्री कृष्ण

विश्वदेव मुनि, वानप्रस्थी

छान्दोग्योपनिषद् के तृतीय प्रपाठक के सत्रहवें खंड में जीवन को यज्ञमय समझने तथा बनाने की शिक्षा है :- **तत् एतद् घोरः आंगिरसः कृष्णाय देवकी पुत्राय उक्त्वा उवाच।**

घोर आंगिरस् ने देवकी के पुत्र श्री कृष्ण को यह कहा था :- जो व्यक्ति मृत्युकाल में ये तीन वाक्य बोलता है वह कामनाओं की प्यास से रहित हो जाता है। कौन-कौन से हैं ?

१. **अक्षितम् असि** - हे भगवान् ! आप अविनाशी है;
२. **अच्युतम् असि** - हे भगवान्! आप सदा अडिग, एक रस (हर काल, हर गुण में एक-सा ही रहते हैं।
३. **प्राण-संशितं असि** - हे भगवन् ! आप प्राण से भी तीक्ष्ण है,

ध्यान में रखें कि इस उक्ति में देवकी-पुत्र श्री कृष्ण का नाम आया है; एक ऐतिहासिक बात है, शुद्ध वैदिक विचार, शुद्ध उपनिषद् में आया है, प्रमाणिक है लेकिन गौण (subordinate) है; प्रमाणिक तो सिर्फ़ वेद ही है। यहाँ घोर आंगिरस ऐतिहासिक व्यक्ति और शिष्य देवकी-पुत्र को यज्ञमय जीवन का रहस्य समझा रहे हैं। और गीता में यज्ञ के उच्च पाठ आते हैं। गीता में ३/९/१० में यह आता है :–

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तय मुक्तसङ्ग समाचर ।।

भा० गीता ३/९/१०

संसारिक कर्मों में बंधन हुआ होता है, वितैषणा तथा पुत्रैषणा स्वभाव से बनी रहती हैं। सामान्य यज्ञ में आहुति देकर **'इदन्न मम'** बोलते हैं अर्थात् ये आहुति मेरी नहीं, ईश्वर की है, अर्थात् निस्वार्थ भाव से देना। लोकैषणा तो स्वाभाविक रूप से रहता है। पुरोहितों को दान-दक्षिणा देकर; मेहमानों को भोजन से सत्कार किया, मन में संतोष है। इस पर अपना अधिकार लेना यज्ञ का महत्व घट जाता है। उपनिषद् स्पष्ट कहता है – **यजेन यज्ञं अयजन्त देवाः ।**

यज्ञ से यज्ञ उत्पन्न, जन्म होता है। स्वार्थ से निस्वार्थ भाव आये तो यज्ञ का महत्त्व बढ़ता है।

यही शिक्षा घोर आंगिरस ने अभूत शिष्य देवकी-पुत्र श्री कृष्ण को दी थी, और समय आने पर अर्जुन को ताना मारकर सिखाये थे जब इनको मोह माया ने पकड़ लिया था; महाभारत युद्ध के मैदान पर !

इतिहास की बात आती है – भारत का दुर्भाग्य आया लगभग ५,००० वर्ष पूर्व, भाई-भाई के मत-भेद, स्वार्थ, राज्य की सत्ता की प्यास, आपस में एक दूसरे के जान लेने पर तुले हुए थे। अर्जुन मोह में फँसकर अपना क्षत्रिय-धर्म को भूलकर हथियार त्याग दिया और कहा – हे केशव ! मैं नहीं लड़ूँगा। अपने भाइयों का खून बहाकर राज-गद्दी पर नहीं बैठना चाहता। तब इसी कठिन मोड़ पर देवकी-पुत्र श्री कृष्ण की अमर शिक्षा जो घोर अंगिरस ने दिया था अमर 'भा० गीता' में अंकित है। श्री कृष्ण ने कुछ आवेश में आकर अर्जुन को डाँटा; कठोर शब्दों में कहा-

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यम् अकीर्तिकरमर्जुन ।।

भा० गीता २/२

अर्थात्, हे अर्जुन ! तू इस समय यह नामर्द (नापूँसक), नर्क भोग वृत्ति, अकीर्ति, अनार्य कहलाने वाले अयोग्यता, दुर्गुण कहाँ से आया ?

अतः समझें की 'आर्य' किसको कहते हैं – जो अपने कर्तव्य धर्म से विचलित नहीं होता, एक डरपोक आर्य नहीं हो सकता, आर्य बनने का व्रत लिया तो निभाना होता है। समाज की उन्नति में अपनी समझना चाहिए। अपने हित में स्वतन्त्र का अर्थ नहीं कि हम कुछ भी कर सकते हैं जो सिद्धान्त के प्रतिकूल हो ।

कर्म योग निष्काम कर्म है, अपने कर्म पर अधिकार की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। फल पर किसी का अधिकार नहीं है, ईश्वर को छोड़ कर ! यह वह कृष्ण नहीं है जिनको हम नचाते हैं, जो छली हैं, राधा को यमुना किनारे अपनी वंशी बजाकर नचाते हैं, गोपियों को छेड़-छाड़ करते हैं, उनकी कलाइयाँ मरोरते है, और-तो-और उनकी बाँसुरी उनको बेहोश कर देती है, और क्या दुष कर्म करवाते हैं यहाँ लिखना उचित नहीं। अपने दुर्गुणों को लेकर महापुरुषों, तपस्वियों पर थोपकर उनकी गवाही लेकर स्वयम् गिरते हैं और ऐसे भगवान् श्री कृष्ण को बदनाम करते हैं। ऐसे ही तपस्वी शिव की दशी करते हैं।

पूर्वोक्त श्लोक विस्तार करते हुए श्री कृष्ण ने **'प्रसविष्यध्वम्'** शब्द आता है। इस अर्थ है 'प्रसव करना', प्रसव का अर्थ है 'नया जन्म'। यज्ञ का मक़सद है 'नया जन्म' देना।

चलचित्र सिनेमा तो अपने देवी-देवताओं अवतारों को क्या-क्या नहीं बनाते हैं। अन्य मतों के अवतारों को कुछ इधर-उधर कहेंगे तो उनका क्या हाल होता है हम जानते हैं ।

अर्जुन बनें और सत्य धर्म के प्रचार में अपने जीवन की आहुति देकर, जैसे ऋषि दयानन्द भगवन् ने दिया। माना अपमान को सहते हुए आगे ही आगे बढ़ते गये मृत्यु पर्यन्त। ऋषि जी और अन्य व्रती लोग जैसे ऐतिहासिक स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, नारायण स्वामी महात्मा हंसराज आदि हुए थे। इन त्यागियों के सुपथ पर चलकर ही आर्यसमाज का कल्याण होगा। विद्वानों के पदचिंह्नों पर चलकर ही शुद्धताई प्राप्त होगी।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि
देव वयुनानि विद्वान् ।

श्री कृष्ण के अमृतमय उपदेश तथा उनकी महान् कृतियाँ हमारे मार्ग-दर्शन कर रहा है क्योंकि वे ईश्वरीय वैदिक ज्ञान का ही पाठ पढ़ा रहे हैं ।

कीर्तियस्य स जीवति ।

नोट – *अवतार वैदिक सिद्धान्त नहीं, ईश्वर अपने ज्ञान, बल तथा करने की शक्ति स्वभाव से ही है।* **स्वभाविकी ज्ञानबल क्रिया च ।**

पृष्ठ २ का शेष भाग

हो। **'पितृभि गच्छस्व'** इस आत्मा को पुनः मानव शरीर अर्थात् प्रकाशमय योनि मिले, जहाँ आत्मा को सुख की अनुभूति हो। जहाँ हर प्रकार का भौतिक सुख हो और शारीरिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी कर सके।

सृष्टि नियम अनुसार जो जैसा बोता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। **'सं यमेनः इष्टा पूर्तेन'** मन्त्रांश उपदेश करता है कि हे जीव ! जिस प्रकार तू ने इस शरीर को नियमित किया है, तुझे पुनः वैसा ही शरीर और इससे भी अच्छा शरीर और संग प्राप्त हो, जिससे तू और भी उन्नति कर सके। नियम से जीवन को नियमित कर और तेरी 'इष्टा' इच्छाओं को पूरा करता चल। आत्मा की इच्छा मुक्ति है। मन्त्र में मुक्ति की प्रार्थना है, कहते हैं, हे जीव! तू अच्छी योनि में जन्म लेते हुए, उस परमानन्द को प्राप्त कर।

जो व्यक्ति जीवन में नियम से रहता है, जो धर्म का आचरण करता है, उसे अपने अच्छे कर्मों के रूप में अच्छी-प्रकाशमय योनि अर्थात् उच्च-कोटि का मानव तन प्राप्त होता है । जो व्यक्ति प्रेय मार्ग पर चलते हुए श्रेय मार्ग तक पहुँचता है, वही धार्मिक होता है। **'परमे व्योमन्'**

परम आकाश की प्राप्ति की इच्छा रखनेवाला, धार्मिक व्यक्ति सर्वोत्कृष्ट आकाशवत् रक्षा स्थान प्रभु के आधीन होते हैं। ऐसे व्यक्ति 'हित्वाय अवद्यं' पाप कर्मों तथा निन्दित आचरणों से दूर होते हैं।

पाप कर्म करने वालों को अन्धकार, दुखवाली योनि मिलती है। शरीर में कमियाँ, धन की कमी, विद्या का अभाव, यहाँ तक कि स्थावर योनि, जैसे वृक्षादि शरीर भी प्राप्त हो सकता है। मन्त्र द्वारा प्रार्थना करते हैं कि **'पुनः अस्तम् ऐहि'** हे जीव! तू **'पुनः'** फिर से इस संसार में धार्मिक – विद्यायुक्त लोगों के संग में आ।

संसार का अटल नियम है कि बिना कमाये कुछ भी नहीं मिलता है। कर्म करो, फल पाओ ।

अच्छे धार्मिक विद्यायुक्त लोगों के संग में आने के लिए स्वयम् विद्वान्, धार्मिक, गुणवान् आदि होना चाहिए । जीव को चाहिए कि वर्तमान जीवन में ही अपने पुनर्जन्म के लिए सामान इकट्ठा करे। लौकिक और पारलौकिक विद्या को ग्रहण कर, सद्मार्ग पर चलकर अपने पुनजन्म को सार्थक बनाये। अपनी स्थिति को ठीक करे। अपने प्रकाशमय जीवन की व्यवस्थित करे। इसी लिए वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों की व्यवस्था ऋषियों ने की है।

'सं गच्छस्त तन्वा सुवर्चाः' – अन्त्येष्टि संस्कार करते हुए, इस मन्त्र द्वारा बार-बार यही प्रार्थना करते हैं कि यह आत्मा जिसने इस शरीर को त्यागा है, उसे **'सुवर्चाः सु वर्चसः'**, अच्छा वर्ग प्राप्त हो। उसे सुन्दर स्वस्थ, बलवान्, तेजस्वी, मान-सम्मान पूर्वक शरीर प्राप्त हो।

जो व्यक्ति जीवन भर सुमार्ग पर सुकर्म करते हुए अपना जीवन व्यतीत करता है, निश्चय ही उसे स्वस्थ और पवित्र जन्म मिलता है। न्याकारी प्रभु का यही न्याय है कि अच्छों का अच्छा और बुरों का बुरा होता है ।

विद्या समिति की पुस्तकें

अभी तक पहली से पाँचवीं तक की पुस्तकें तैयार हैं।

पहली कक्षा में ४४ पाठ हैं, जिनके अन्तर्गत बच्चे ४४ शब्द सीखते हैं और ४४ अक्षर सीख लेते हैं। इसके अलावा हर पाठ के नीचे संध्या के मंत्र हैं। अतः एक वर्ष के अन्तर्गत पहली कक्षा के बच्चे पूरी संध्या सीख लेते हैं।

दूसरी कक्षा में १७ पाठ हैं। पाठों के अन्तर्गत बच्चों को काफ़ी शब्दावली का ज्ञात हो जाता है। कुछ साधारण अभ्यास कार्य दिए गए हैं। साथ में एक साल के अन्तर्गत बच्चे ईश्वर-स्तुति प्रार्थना उपासना के मन्त्र सीख लेते हैं।

तीसरी कक्षा में १५ पाठ है। इन पाठों में काफ़ी अभ्यास कार्य है। लगभग व्याकरण के सभी तत्व आ गए हैं या हिन्दी भाषा के लगभग सभी अक्षर आ गए हैं। एक वर्ष के अन्तर्गत तीसरी कक्षा के बच्चे अग्निहोत्र सीख लेते हैं।

चौथी कक्षा में १७ पाठ है। अभ्यास कार्य के माध्यम से व्याकरण के सभी तत्व आ गए हैं। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे आर्यसमाज के दस नियम सीख लेते हैं।

पाँचवीं कक्षा में १५ पाठ हैं। इस पुस्तक में प्रश्नपत्र का एक नमूना भी है। व्याकरण के अनेक तत्व निहित है। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे संध्या की आवृत्ति करते हैं मंत्रों के भावार्थ के साथ।

छठी कक्षा – इस पुस्तक से प्राथमिक शिक्षा के सभी ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। साथ में प्रातःकाल के मंत्र **'प्रातरग्निं .....'** सीख लेते हैं। साथ में भोजन के मंत्र भी सीख लेते हैं।

पहली से छठी तक बच्चे सीखते हैं :– १. संध्या, २. ईश्वर-स्तुति प्रार्थना उपासना के आठ मंत्र, ३. अग्निहोत्र, ४. आर्यसमाज के १० नियम, ५. संध्या का भावार्थ, ६. प्रातःकाल के मन्त्र, भोजन के मंत्र

इसके अलावा धार्मिक ज्ञान तथा चरित्र निर्माण के लिए बाल शिक्षा, धार्मिक शिक्षा १-१० भाग तक संलग्न हैं। गिनती १-६ कक्षा तक पाठ्यक्रम ।

शिक्षा में एकरूपता हो और कार्य सुचारु रूप से हो – १. गत वर्ष हमने चार जगहों पर अध्यापकों की गोष्ठी की। २. इस साल ६ जगहों में गोष्ठी की । गोष्ठी चार भागों में विभाजित थी।

१. पुस्तक पर कार्य कैसे किया जाय ।
२. मन्त्रों का उच्चारण
३. अध्यापकों की ज़िम्मेदारी
४. कक्षा नियन्त्रण

हमारी पाठशालाओं में कक्षा १-५ तक ६,००० बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं । छठी कक्षा में कभी ८०० तो कभी ६०० बच्चे राष्ट्रीय परीक्षा में भाग लेते हैं।

अभी भी कुछ कार्य का संचालन करना है। इसके अलावा दो सैद्धान्तिक परीक्षाएँ हर साल नियमित रूप से होती हैं। १. सिद्धान्त प्रवेश, २. सिद्धान्त रत्न, १०० से अधिक परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में भाग लेते हैं।

प्रभाकर जीऊत
प्रधान, विद्या समिति

आर्ष गुरुकुल को दान

पंडिता राजवंश सॉलिक	३,०००
ओलिये आर्यसमाज	७५०
पाई आर्यसमाज	१,०००
His Excellency Mr Girish Nunkoo, High Commissioner of Mauritius in U.K.	४,०००
पंडिता प्रेमिला सिरतन	५,०००

to be continued .....

Mémoires

Shri Mohunlall Mohith (22.09.1902-03.09.2005)

Lives of great men all remind us, we can make our lives sublime, and, departing, leave behind us, footprints on the sands of time.(Henry Wadsworth Longfellow.)

Shri Mohunlall Mohith n'a pas eu accès à l'éducation formelle, entre les quatre murs d'une classe. Il a pu briller au-dessus de ses pairs avec une personnalité exemplaire. Il a été à la plus grande université du monde … l'Université de La Vie.

Des ténèbres de l'ignorance il a su forger son destin et progressé vers la lumière des connaissances, de la misère vers l'abondance, de l'inconnu pour être reconnu pas seulement au sein de l'Arya Samaj, mais comme un des bâtisseurs d'une l'Ile Maurice moderne. Il a côtoyé des gens de tous bords (de l'homme de la rue, des sages ou érudits des connaissances Védiques, des chefs d'état et autres distingués visiteurs de passage à Maurice.

Son humilité au sommet lui a valu une reconnaissance mondiale comme un infatigable travailleur œuvrant dans la lignée tracée par Maharishi Dayanand Saraswati, le fondateur de l'Arya Samaj : l'amélioration des conditions physiques, morales / spirituelles et sociales d'autrui.

La recette de cette mission accomplie et de la longévité de Shri Mohunlal Mohith comprenait entre autres :

• *Niyamita jeevan* : Un train de vie équilibré, se lever de bonne heure pour la prière, la méditation, le svādhyāya (la lecture du Véda, des œuvres des sages, etc.), rien autre que des repas végétarien qui défiait le concept de nos temps 'dites modernes'.
• *Yama-niyama & Dharma* : la pratique des valeurs humaines selon le Yoga Darshan et les dix consignes de Manu à chaque moment de sa vie.
• *Tapah* : développer la résilience pour affronter les difficultés. [*Bhookha-pyāsa* : il ne déjeunait pas le dimanche car ses multiples activités sur le plan social lui réservait bien des surprises - où et quoi manger? …au temps qu'il marchait des kilomètres pour arriver à sa destination du jour. *Māna – apmāna* : Les éloges ou l'hypocrisie ne lui tournaient pas la tête.]
• *Ishvara par atuta vishvāsa* : une foi inébranlable en dieu.
• *Ātma vishvwāsa* : la confiance en ses capacités.
• *Sunishchita vichāra* : des objectifs clairs et spécifiques.
• *Utsāha* : une désire innée de réussir.
• *Sāhasa & Karmaveerta* : le courage et la détermination dans ses actions.
• *Shareerika & mānasika shaktiyon* : forger son état physique et moral.
• *Viveka purna purushārtha* : des efforts conjugués pour atteindre les objectifs.
• *Ātmanirikshana se apne doshon ko hatana aur gunon va ātmabala ko badhānā:* un audit / inventaire régulier au quotidien de ses actions (mana, vaani aur sharira se kiye huve karmon) pour s'extirper des maux et de surcroit raffermir ses dispositions à tous les niveaux pour une amélioration continue de sa manière de faire et d'agir.
• *Satyavādi & paropkāri* : la vérité et la bienveillance parfumaient la personne. Il a mis en place des institutions à partir de ses propres fonds pour l'avancement de l'humanité. Nombreux sont ceux qui lui sont et seront toujours reconnaissants pour sa magnanimité (le support moral, financier …etc.)
• *Doordarshee* : la lucidité, la finesse de l'intelligence. Dans les années 1990-2000 il supervisait personnellement les sessions de formations destinées aux jeunes au sein de l'Arya Samaj de l'Avenir, St. Pierre les dimanches après-midi. L'équipe d'animateurs / formateurs comprenait le Dr. O.N. Gangoo, Mons. Bramdeo Mokoonlall et Mons. Premlall Chummun. C'était sa façon d'assurer la relève *(management succession)* au sein de l'Arya Samaj et ailleurs. Il s'était retiré au moment opportun pour laisser la place aux autres et se limitait au rôle d'un guide au sein de l'Arya Sabha Mauritius.

Shakespeare l'a si bien dit : *« Il y a une vague dans les affaires des hommes, qui, pris au passage, mène à la fortune. Négligé, tout le voyage de la vie se poursuivra dans les ténèbres et la misère. ... prendre le courant au bon moment nous permet de rester à flot, autrement on coule. »*

Un hommage digne à ce grand tribun ne peut être autre que d'emboiter ses pas …vivre une vie exemplaire (role model) … où s'harmonisent nos pensées, paroles et actions. Il disait souvent : *« Ce qu'a réussi une personne peut être repris et amélioré par d'autres pour un avenir meilleur. »*

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

[Note : *Cet article consiste l'essentiel d'une intervention prévue à l'Arya Samaj Mandir, L'Avenir, St. Pierre le dimanche 25 Septembre 2016 au cours du programme en hommage à ce grand tribun qui n'a pu être présenté par faute de temps.]*

Attitude

Attitude is a catalyst
It fuels our determination
It energises our thoughts
It sparks extraordinarily results.

Attitude is a small word
But it creates a big difference in one's life
A positive attitude causes positive outcomes
It has a ripple effect.

Attitude is a worthwhile habit
It alters our mindset
It increases our knowledge
It changes our viewpoint.

Attitude is multifold
It has innumerable aspects
It develops different facets of our life
Our attitude determines our success.

Attitude is multifunctional
It makes us courageous
It unravels our dreams
It unlocks our mysteries.

Attitude is manifold
It spearheads our challenges
It enlivens our lives
It develops our mental skills.

Attitude is positivity
When you have patience,
You have nothing
When you have attitude,
You have everything.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

SHRAVANI UPAKARMA - 2016

Sookraj Bissessur, B.A, Hons

Under the aegis of the Arya Sabha Mauritius Shravani Upakarma festival was celebrated at Ilot, Pamplemousses at the three under mentioned respective places with consideration spiritual gusto and also with huge spiritual devotion. In all these Arya Samaj, the halls and tents were entirely full up that seating accommodations virtually became quite short. The auspicious celebrations were scheduled as follows :-

At Ilot Arya Samaj Branch No. 20 – 10.08.16 (from 3.00 p.m. to 5.45 p.m)

Officiating priests : Pandit S. Sohar and Pandita Dhanwantee Pokhraj. Yajna was performed by both Pandit/Pandita. Special oblations with verses from the Rig Veda were explained expounded and also set forth in good and comprehensive details to the audience. Religious songs accompanied by Shravani bhajans were sung by the concerned priests/pundits as well as participants.

Dr Jaychand Lallbeeharry emphasizing upon the importance of Shravani Upakarma festival has pointed out that 'Shravani Upakarma' is one of the most important Vedic festivals. In Mauritius too, it is celebrated during the whole month of Shravan. The origin of most of the Hindu festivals such as Sankranti, Holi, Divali, Shravani etc. can be traced to the ancient/primitive "Vedic period when India was the very land of the great 'Rishis' and the Aryas, that is the noble people. These festivals were fashioned by the sublime – 'Rishis' seers of yore. Further, he has also added that Shravani is also the festival of study. It is the festival of saying, speaking, uttering, preaching, scrutinizing, reading, hearing and listening the precious and profound words of wisdom of the VEDA.

In a concluding note, Shrimati Reshmi Lallbeeharry had laid huge stress upon the fact that the Veda is the Scripture of all True knowledge. And prior to give a vote of thanks to all those present, she expressed her gave concern about the widespread existence of the new and innovating synthetic drugs / synthetic substance, which have become rampant in our fascinating and beautiful country (Mauritius) as well, and have already started endangering and jeopardizing the state, fate, future and situation of our budding and blooming youths, youngsters teenagers.

So, youths beware and always learn to be there where good and honest persons reside!

13.08.16 – 15.08.16 – Shravani festival was celebrated at the residence of Mr & Mrs Raj Souria Bissessur and Members of Bissessur family.

Daily Programmes – 9.00 a.m – 11.30 a.m. – Hawan Ceremony and Pravachan
12.00 – Mahaprasad
15.00 – 18.00 – Hawan Ceremony
18.00 – 19.00 – Satsang
19.15 – Mahaprasad

N.B. - The religious programme scheduled for Shrawani festival were all the same for the consecutive three days for both morning and afternoon session.

Officiating Priests – Pandit S. Muddhoo and Pandit R. Gopal. During all three days normal Yajna were performed and special oblations with verses of Chapter 2 of the Yajur Veda were explained to the audience. Divine songs, accompanied by Shravani Bhajans were sung by the concerned Pandits and pariticipants.

On the last day of the Yajna (Purnahuti day) Pandit Jaychand Aukhojee made a very inspiring, absorbing, thought provoking and impressive speech upon the significance of performing Shravani Yajna. Mahaprasad were served to all, after thanks giving ceremony and Shanti Path.

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

स्मृति यज्ञ

एक सौ चौदह साल पहले मोहनलाल का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। उनका जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। उनके गाँव लावेनीर आर्यसमाज मंदिर में, जिसमें देश के वित्त मंत्री माननीय प्रवीण कुमार जगनाथ एवं शिक्षा मंत्री, श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन उपस्थित थे ।

कार्यारम्भ यज्ञ से हुआ, जिसको सम्पन्न किया आचार्य ब्रह्मदेव माकुनलाल और मोका प्रान्त के पुरोहित-पुरोहिताओं ने। प्रोग्राम के अन्तर्गत भजन, कविता-पाठ और तीन मुख्य भाषण हुए। तीनों वक्ताओं ने मोहनलाल जी के जीवन की झाँकियाँ प्रस्तुत कीं । आर्य सभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू ने उनसे अपनी पहली भेंट से लेकर अंतिम भेंट तक का रेखाचित्र प्रस्तुत किया ।

अन्त में सभी उपस्थित लोगों का महाप्रसाद से सत्कार किया गया ।

संगीत कक्षा का उद्घाटण

रविवार ता० २५ सितम्बर को प्रातः ९.३० बजे मेनिल आर्य मंदिर में संगीत की कक्षा का उद्घाटण हुआ। मोरिशस गणराज्य के उपप्रधान मंत्री, जनाब सौकतली सुधन के कर-कमलों द्वारा हुआ। उसी मौके पर उन्होंने पूरा एक सैट संगीत-वाद्य प्रदान किया।

आर्य सभा के महामंत्री सत्यदेव प्रीतम ने अपने लघु भाषण में उपप्रधान मंत्री को धन्यवाद दिया। आर्य सभा द्वारा संचालित सांस्कृतिक समिति के प्रधान रामधनी ने भी एक छोटे भाषण के दौरान सांस्कृत समिति के भावी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

इतिहास के अनमोल रत्नों (पन्नों) से लाभ उठाए

श्री शिव हिरालाल श्री आकस्मात मृत्यु

गत तारीख १४ जून १९३७ को दी मौण्ट निवासी श्री शिव हिरालाल जी की आकस्मात मृत्यु हो गई और बुधवार को श्री पं० काशीनाथ द्वारा अन्त्येष्टि संस्कार हुआ। श्मशान यात्रा में टापू के प्रतिष्ठित आर्य पुरुषों ने भारी संख्या में भाग लिया था। आप आर्यसमाज के स्तम्भ रूपी नेता थे। आप का सेवा-भाव आर्यसमाज के प्रति निरन्तर था। इससे मॉरिशस के अखिल आर्य सुपरिचित है। आपकी आकस्मात मृत्यु से केवल परिवार में ही शोक की घटा नहीं छाई हुई है, बल्कि समस्त आर्यसमाज शोकातुर है।

अतः हम भी अपनी शोक-सहानुभूति प्रकट कर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगतात्मा को शांति सद्गति और शोक सन्तप्तजन को धैर्य तथा साहस प्रदान करें।

एक व्यथित मित्र
आर्य वीर, २५ जून १९३७
प्रेषक : प्रह्लाद रामशरण